www.xtrapapers.com

University of Cambridge International Examinations

International General Certificate of Secondary Education

March 2018 Examination in Hindi as a Second Language.

Paper 2, Listening Comprehension.

Turn over now

[pause 5 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: **अभ्यास 1: प्रश्न 1-6**

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: *** संवाद 1**

FEMALE: देवियो और सज्जनो, लंदन आई की उड़ान पर आपका स्वागत है। लंदन आई अपना एक चक्कर पूरा करने में लगभग आधा घंटा लेती है। उससे पहले सिनेमा में आपको चार मिनट की एक 4D फ़िल्म भी दिखाई जाएगी जिसमें आप लंदन के प्रमुख आकर्षणों को निकट से देख सकेंगे। लंदन के प्रमुख आकर्षणों की दिशा और स्थिति के संकेत कैप्स्यूल में लगे हुए हैं। मौसम भी खुला और सुहाना है। इसलिए विहंगम दृश्य का पूरा आनंद लें। धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 2**

FEMALE:
महिलाः भाई साहब, यहाँ एक क़िताबों की पुरानी दुकान हुआ करती थी!
पुरुषः जी, वह तो कई साल पहले बंद हो गई। अब कौन आता है क़िताबों की दुकान पर! लोग इंटरनेट पर ख़रीद लेते हैं, घर बैठे।
महिलाः जी, वह तो ठीक है लेकिन मुझे एक हिंदी की एक दुर्लभ क़िताब चाहिए थी जो ऐसी ही दुकानों पर मिल सकती है।
पुरुषः तब तो आपको दरिया गंज या नई सड़क जाना होगा। मैट्रो से चली जाइए।
महिलाः जी, धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 3**

FEMALE: सिंगापुर में सामाजिक विज्ञान के प्रोफेसर पाराशर कुलकर्णी राष्ट्रमडंल लघु कहानी पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। पुरस्कृत रचना चार ऐसे व्यक्तियों की कहानी है जो मक्खन के एक विज्ञापन में गाय दिखाने के लिए उसकी तलाश में निकलते हैं। उनकी यह कहानी तकरीबन 4000 प्रतियोगियों में से चुनी गई थी जिसके लिए उन्हें पांच हजार पाउंड का पुरस्कार दिया गया।

www.xtrapapers.com

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 4**

FEMALE: महिलाः नमस्कार। अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखाइए!
पुरुषः जी, अभी दिखाता हूँ। लेकिन बात क्या है ऑफ़िसर? रफ़्तार तो ज़्यादा नहीं थी।
महिलाः अभी पता चल जाएगा। आपके पास गाड़ी के बीमे के काग़ज़ात हैं?
पुरुषः जी, हैं तो...यहीं कहीं थे। एक मिनट...ये लीजिए।
महिलाः ठीक है। आपको पता है आपकी बाईं ओर की बत्ती काम नहीं कर रही?
पुरुषः जी, घर से निकलते वक़्त तो काम कर रही थी। ...मैं दिखा लूँगा।
महिलाः जितनी जल्दी हो सके ठीक करा लीजिए। धन्यवाद।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 5**

FEMALE: देवियो और सज्जनो! कुछ देर में हम पटना उतरने वाले हैं। कृपया अपनी-अपनी सीटों पर लौट जाएँ, कुर्सी की पेटी बाँध लें और अपनी कुर्सी सीधी कर लें। शौचालयों का प्रयोग अब वर्जित है। अपने मोबाइल फ़ोन और दूसरे संचार उपकरण बंद कर लें। सामने की सीटों पर बैठे हुए यात्रियों से अनुरोध है कि अपना सामान सीटों के ऊपर बने सामान कक्षों में रख दें। कुछ देर में बत्तियाँ धीमी कर दी जाएँगी। आप चाहें तो पढ़ने वाली बत्ती जला सकते हैं।

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: महिलाः नमस्ते भाई साहब, बहुत दिनों बाद दिखाई दिए! कहीं बाहर गए थे क्या?
पुरुषः जी, छुट्टियाँ मनाने सिक्किम गए थे। बस कल ही लौटे हैं। आप कहीं नहीं गए?
महिलाः नहीं, भाई साहब, बच्चे दाख़िले की तैयारियों में लगे हैं और पेरिस वाले चाचा जी भी आए हुए हैं।
पुरुषः अच्छा सक्सेना साहब आए हैं! वही जो पढ़ाते हैं?
महिलाः नहीं, वे तो बड़े चाचा जी हैं। इनका तो वहाँ अपना कारोबार है।
पुरुषः अरे हाँ, आपने बताया भी था।**

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 1 के इन संवादों को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 10 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

www.xtrapapers.com

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

भूटानी लेखक डॉ कार्मा फुन्त्शो के साथ पहाड़ की संवाददाता चित्रा नेगी की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: *चित्राः डॉ कार्मा फुन्त्शो, पहाड़ के पाठकों की ओर से आज की चर्चा में आपका स्वागत है।

MALE: कार्माः धन्यवाद, चित्रा जी।

चित्राः कार्मा जी, भूटान ने अपनी प्रगति का एकदम नया पैमाना चुना है। थोड़ा उसके बारे में बताइए।

कार्माः चित्रा जी आपने बिलकुल सही सुना है। भूटान में हम केवल आर्थिक विकास को प्रगति का पर्याय नहीं मानते। बल्कि उसके साथ-साथ सामाजिक विकास, पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण और स्वच्छ प्रशासन को प्रगति का सही पैमाना मानते हैं। इसलिए हमने उसे मापने के लिए GNP यानी सकल राष्ट्रीय उत्पाद की जगह GNH यानी सकल राष्ट्रीय ख़ुशहाली को पैमाना बनाया है।

चित्राः यानी लोग कितने संपन्न हो रहे हैं इसकी बजाए आप लोग कितने ख़ुशहाल हो रहे हैं इसे प्रगति का सही पैमाना मानते हैं।

कार्माः जी हाँ, और ख़ुशहाली के पैमाने पर हम दुनिया में पहले स्थान पर हैं। अमरीका और यूरोप के अमीर देशों से कहीं आगे।

चित्राः जी, लेकिन आप यह सुनिश्चित कैसे करते हैं कि लोग ख़ुशहाल रहें।

कार्माः भूटान में हम लोगों की ऐसी देखभाल करते हैं जो अमीर देशों में भी अभी तक एक सपना है। मिसाल के तौर पर भूटान में स्कूली शिक्षा मुफ़्त है और उसके बाद उच्च शिक्षा या फिर कामगरी का प्रशिक्षण भी मुफ़्त है जिसका फ़ैसला योग्यता के आधार पर किया जाता है। यही नहीं, स्वास्थ्य सेवा मुफ़्त है और दवाएँ भी।

चित्राः लेकिन इस सब के लिए सरकार के पास धन कहाँ से आता है?

कार्माः लोगों को ये सारी सुविधाएँ मुफ़्त देना और प्राकृतिक संपदा का संरक्षण करते रहना आसान काम नहीं है। अपने संसाधनों का सावधानी से प्रयोग करके हमने इसे संभव बना लिया है। हम पर्यावरण की क़ीमत पर अपना विकास नहीं करना चाहते। और इसे सुनिश्चित करने के लिए भूटान नरेश ने एक बड़ा काम और किया जो भूटान को दुनिया में बेजोड़ बनाता है।

चित्राः वह क्या था?

कार्माः वह था भूटान को कार्बन तटस्थ देश बनाना। यानी ऐसा देश जो उतनी ही कार्बन गैसें पैदा करे जितनी गैसों को सोखने की क्षमता उसके जंगलों में हो। इसे सुनिश्चित करने के लिए भूटान नरेश ने देश के संविधान में यह लिखवा दिया कि देश का 60

www.xtrapapers.com

प्रतिशत भाग प्राकृतिक वनों के लिए सुरक्षित रखा जाएगा। सौभाग्य से भूटान की आबादी भी केवल सात लाख ही है।

चित्रा: तब तो संविधान की इस धारा का पालन करते रहने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

कार्मा: जी नहीं। लेकिन हमने उससे भी दो क़दम आगे जाकर देश के 72 प्रतिशत भाग को प्राकृतिक वनों के लिए सुरक्षित कर दिया है। हम जितनी कार्बन गैसें पैदा करते हैं, हमारे वन उनसे तीन गुना गैसें सोख लेते हैं। इसलिए हम कार्बन तटस्थ की जगह दुनिया के एकमात्र कार्बन विहीन देश हो गए हैं क्योंकि हमारे वन दूसरे देशों की कार्बन गैसें भी सोख सकते हैं। लेकिन हम दुनिया के पर्यावरण के लिए एक बड़ा काम और कर रहे हैं।

चित्रा: वह क्या है?

कार्मा: वह है पड़ोसी देशों को हमारी नदियों से बनने वाली पनबिजली का निर्यात करना। हम इतनी पनबिजली का निर्यात करते हैं जिसे कोयले या गैस से बनाने में हमारे देश से निकलने वाली कार्बन गैसों से तीन गुना कार्बन गैसें निकलेंगी। यानी हमारी पनबिजली उतनी कार्बन गैसों से जलवायु का बचाव कर रही है। हमारी पनबिजली क्षमता को बढ़ा कर दस गुना तक किया जा सकता है। जिससे दुनिया के जलवायु की रक्षा भी होगी और हम कार्बन विहीन देश भी बने रहेंगे।

चित्रा: कार्मा जी, अपने देश की दिलचस्प जानकारी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

कार्मा: धन्यवाद।**

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8-13**

हस्तशिल्प संस्था, गाथा की निदेशिका रंजना महापात्रा के साथ पत्रकार संदीप रथ की बातचीत को ध्यान से सुनिए और दिए गए प्रत्येक कथन को पढ़कर बताइए कि कथन सही है या ग़लत। अपना उत्तर उपयुक्त खाने में सही का निशान लगाकर दीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: *संदीपः रंजना जी, राष्ट्रीय हस्तशिल्प कला संगोष्ठी में आपका स्वागत है।

FEMALE: रंजनाः धन्यवाद संदीप जी।

संदीपः रंजना जी आपके राज्य उड़ीसा में भुवनेश्वर से पुरी के रास्ते में एक छोटा सा क़स्बा आता है, पीपली। वहाँ के एप्लिके हस्तशिल्प के बारे में बताइए।

रंजनाः संदीप जी, एक सपाट कपड़े पर दूसरे कपड़ों की कतरनों और शीशे जैसी सजावट की चीज़ों की सिलाई कर कलात्मक आकृतियाँ बनाना एप्लिके कहलाता है। कतरनों और सजावट की चीज़ों को रंग-बिरंगे धागों से कलात्मक टांके लगाते हुए सिया जाता है। इसलिए कतरनों के साथ-साथ सिलाई भी एप्लिके का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

संदीपः एप्लिके किस भाषा का शब्द है रंजना जी और इसका मतलब क्या है?

रंजनाः यह फ़्रांसीसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है एक कपड़े पर दूसरे कपड़े और सजावटी सामान को सी कर आकृतियाँ बनाना। राजस्थान में यही काम गोटे से किया जाता है जिसे चंदोवा कहते हैं।

संदीपः तो क्या पीपली में एप्लिके की कला फ़्रांस से आई होगी?

रंजनाः यह कहना मुश्किल है। कहते हैं की पीपली को ग्यारहवीं शताब्दी में कटक के राजा ने एप्लिके हस्तशिल्पियों के लिए बसाया था ताकि वे पुरी के जगन्नाथ मंदिर और उस कि रथयात्रा के लिए रंग-बिरंगे छत्र और सजावट का सामान तैयार कर सकें। फ़्रांस में भी उस समय तक एप्लिके का विकास हो चुका था। लेकिन यह कला वहाँ से पीपली आई या फिर पीपली से वहाँ गई यह कह पाना कठिन है।

संदीपः पीपली में एप्लिके के लिए कच्चा माल यानी कपड़े और धागे कहाँ से आते हैं? पीपली में कोई कारख़ाना तो है नहीं।

रंजनाः जी यह बात बिलकुल सही है। एप्लिके हस्तशिल्प के लिए कपड़ा कोलकाता से और धागे सूरत से मँगवाए जाते हैं। आज भी एप्लिके के दर्ज़ी जगन्नाथ रथयात्रा के लिए हर साल छत्र, तरश, दीपदान, झालरें और रथों के पहरावन बनाते हैं जिनकी कला और रंग विन्यास देखते ही बनते है। इसके अलावा वे दीवारों की सजावट के लिए चटख़ रंगों वाले एप्लिके चित्र, बिस्तरों के लिए बिछावन, झोले, छाते वगैरह बनाते हैं, जो भारत ही नहीं पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

संदीपः इनकी बनावट, शैली और गुणवत्ता में इतने सालों में क्या ख़ास बदलाव आए हैं?

www.xtrapapers.com

रंजनाः जी, फ़ैशन के हिसाब से रंगों का विन्यास, सिलाई के डिज़ाइन, कपड़े और धागों का चुनाव और चित्रों की विषयवस्तु में परिवर्तन आया है। पहले केवल पौराणिक गाथाओं, चरित्रों, आकृतियों और जानवरों का चित्रण होता था। अब सिनेमा के नायकों, दृश्यों और लोकप्रिय खिलाड़ियों के चित्र भी दिखाई देने लगे हैं। इसके अलावा कतरनों और सजावटी सामान को कपड़े के ऊपर लगाने की बजाए, कई बार उन्हीं के ऊपर कपड़ा लगा कर उनमें छेद कर दिए जाते हैं ताकि उनसे होकर कतरनें और सजावटी सामान उभर सके। इसे उल्टी एप्लिके कहते हैं।

संदीपः रंजना महापात्रा जी, पीपली के एप्लिके हस्तशिल्प की रोचक जानकारी देने के लिए आपका धन्यवाद।

रंजनाः आपका भी धन्यवाद, संदीप जी।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

www.xtrapapers.com

FEMALE: **अभ्यास 4: प्रश्न 14-20**

यूरोपीय देश सर्बिया के ऐतिहासिक शहर नोवी साद की यात्रा पर चित्रकार सीरज सक्सेना के संस्मरण को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

यह संस्मरण आपको दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * नमस्कार। मैं हूँ सीरज सक्सेना।

यहाँ नोवी साद में गंदगी नज़र नहीं आती। सड़क पर कार और अन्य वाहन भी लोग बड़े सलीक़े से खड़ा करते हैं। किसी और को कोई भी शिकायत और परेशानी न हो, इसका ख़याल रखा जाता है। अपना कूड़ा कचरा लोग नगर-निगम के बड़े कूड़ेदान में ही फेंकते हैं। फ़ुटपाथ और साइकिल पथ भी साफ़ और भारत में पाए जाने वाले तरह-तरह के अतिक्रमण से दूर हैं। पैदल चलना और साइकिल चलाना यहाँ के लोगों को पसंद है। कभी वाहनों का शोर नहीं सुना, हॉर्न भी एक या दो बार ही कहीं किसी वाहन का बजा। हमारे यहाँ तो वाहन आवाज़ के साथ ही चालू होता है, कभी आरती बज उठती है तो कभी किसी गीत की धुन!

मुख्य चौक एक खुले मंच की तरह है। एक ओर गिरिजाघर की तिकोनी ऊँची मीनारें हैं तो दूसरी ओर दुकानें। यहां दिन भर चहलपहल रहती है। कुछ देर बैठ कर वहाँ घट रहे हर दृश्य को क़रीब से देखा। कभी साइकिल पर गुज़रती कुछ स्त्रियाँ, गुब्बारे हाथ में लिए कुछ बच्चे, विदेशों से आए पर्यटक अपने गाइड को गंभीरता से सुनते हुए, अपनी-अपनी मंज़िल की ओर जाते छात्र-छात्राओं की टोली हँसी-ठिठोली करती ओझल हुई। यहाँ की महिलाओं में बराबरी का आत्मविश्वास है। अपने स्त्रीत्व को लेकर उनका नजरिया हिंदुस्तानी महिलाओं से भिन्न है।

ऐतिहासिक पेत्रोवरादीन दुर्ग के ऊपर बने रेस्तरां के बाहर एक ऊँची मीनार की बड़ी घड़ी दोपहर के दो बजा रही थी। कुछ लोग इसके पास जाकर तस्वीरें खिंचवा रहे थे। डेन्यूब नदी पर बने दुनव सेतु से मुख़ातिब लोहे की पतली छड़ों से बनी रेलिंग में अनेक छोटे ताले बंधे थे। हर ताले पर कुछ लिखा था। एक साथी ने बताया कि ये प्रेम-बंध हैं। ऐसी मान्यता है कि प्रेमी-प्रेमिका अपना नाम लिख कर यहाँ ताला लगाएँ तो वे उम्र भर प्रेम में बँधे रहेंगे। ठीक उसी तरह जैसे हमारे यहाँ मंदिरों, और वृक्षों में कलावा, घंटियाँ आदि बाँधते हैं। पंचमढ़ी में गाड़े जाने वाले त्रिशूल भी इन तालों को देख कर याद आए। यहां प्रेम में सदा बँधे रहने की मन्नत माँगी जाती है तो अपने यहाँ पुत्र, व्यवसाय, स्वास्थ्य, नौकरी, घर आदि की।

महल के तल पर अनेक स्टूडियो हैं। चित्रकार अपने चित्र बना रहे हैं। नोवी साद नगर निगम इन की देखरेख करता है। चित्रकार मित्र शेशा का स्टूडियो भी यहीं है। गोल छत और दीवारों का उनका स्टूडियो पूरी तरह चित्रों से भरा है। उन्होंने यहाँ के स्थानीय पेय राकिया से हमारा

www.xtrapapers.com

स्वागत किया। दूसरी चित्रकार मित्र इवाना के लिए तुर्की कॉफ़ी बनी। शेशा के चित्र ज़मीन से जुड़े चित्र हैं, ठीक उनके व्यक्तित्व की तरह। इवाना की चित्रशाला भी यहीं है कला विद्यालय के क़रीब। एक बुनाई केंद्र भी है, जिसमें रंग-बिरंगे धागे हैं, बुनाई के करघे हैं। कलात्मक टेपेस्ट्री भी यहाँ बनाई जाती है।

यह स्टूडियो समय-समय पर कलाकारों के लिए प्रतियोगिता भी आयोजित करता है। स्टूडियो की संचालक ने हमारी मेज़बान यास्मीना को पहचान लिया। ये दोनों स्कूल में साथ पढ़ी थीं। यास्मीना बड़े चाव से अपने बचपन के बारे में बताती हैं। अपने प्रवास के दौरान कई बार शाम की सैर के समय दुनव सेतु से होकर पेत्रोवरादीन पहुँचा हूँ। यहाँ शाम को बार में कुछ मित्र एकत्र होते और पूल गेम खेलते। बचपन में कैरम बोर्ड की सीख यहाँ बहुत काम आई। इस शहर की यात्रा से काफ़ी कुछ सीखा है, जो समय-समय पर मेरी कला में व्यक्त होगा।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 4 का यह संस्मरण अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**

HV: This is the end of the examination.